हमें मालिक ने क्यों बनाया

ज़ैड खान

गुड मॉर्निंग नमस्कार ससरियाकाल अस्सालामु अलइकुम मेरे प्यारे भाई आज हम बात करेंगे उस प्रश्न पर जो हर मानव के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। वह यह है कि हमें मालिक ने क्यों बनाया और वह हम से क्या चाहता है और हमारे साथ मरने के बाद क्या होगा। इस सवाल का जवाब मालिक ही सब से अच्छा दे सकता है क्योंकि किसी चीज़ का बनाने वाला ही सही बता सकता है कि उसने वह चीज़ क्यों बनाई है। जैसे कोई इंजीनियर कार बनाता है तो वह इंजीनियर ही सब से सही बता सकता है कि वह कार उस नें क्यों बनाई। इसी लिए क़ुरान जो कि मालिक की आखरी किताब है मालिक ने उस में इस प्रश्न का उत्तर दिया है।

सब से पहले तो यह जानना चाहिए के हमारा मालिक (अल्लाह) कैसा है। तो उस ने अपने पवित्र क़ुरान में अपना परिचय खुद कराया। वह कहता है “कह दो कि अल्लाह एक है। अल्लाह किसी पर निर्भर नहीं है। न उसने किसी को जना न उसको किसी ने जना। ओर कोई किसी भी चीज़ में उसकी बराबर नहीं है।” (क़ुरान 112: 1-4)

पैदा होने से पहले हम कहां थे

क़ुरान यह बताता है कि अल्लाह ने सब इनसानों की आत्माओं को यानी पहले इनसान से लेकर आख़री इनसान तक की आत्मा

को एक साथ बनाया था। और उन्हें एक अलग दुनिया में रखा था जिस्को 'आलमे अरवाह' (आत्माओं की दुनिया) कहा जाता है। वहाँ पर मालिक ने सभी मनुष्यों से एक सवाल किया था कि 'क्या मैं तुमहारा रब नहीं हूं'। तो सारे मनुष्यों ने एक ज़बान होकर जवाब दिया कि 'बे शक' (आप ही हमारे रब हैं)।

इसी को क़ुरान कहता है "और जब तुम्हारे रब ने आदम की औलाद की पीठों से उनकी औलाद निकाली तो उनसे खुद उनके मुकाबले में इक़रार करा लिया (पूछा) कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ तो सब के सब बोले हाँ हम उसके गवाह हैं। ये हमने इसलिए किया कि ऐसा न हो कि कहीं तुम क़यामत के दिन बोल उठो कि हम तो उससे बिल्कुल बे ख़बर थे" (7:172)

लेकिन तब यह कहना बहुत आसान था क्योंकि सारी आत्माएँ अपने मालिक और उसकी शक्ति को देख रही थीं। लेकिन उन में सभी तरह की आत्माएँ थीं अच्छी भी ओर बुरी भी। कोई औरत कोई मर्द, कोई बहुत बड़ा वैज्ञानिक जैसे कि अल्बर्ट आइंस्टीन या इसाक न्यूटन वगैरा। कुछ लोग इन मैं से बहुत अच्छे भी थे जैसे कि संत या महात्मा और कुछ बहुत क्रूर (ज़ालिम) भी थे जैसे कि हिटलर या चंगेज़ ख़ान वग़ैरा। चूंकि मालिक ने सभी को बनाया था इस लिए वह सब के चरित्र के बारे में जानता था कि कौन कैसा है। हालांकि वे सभी लोग मालिक के सामने अच्छे बने रहते थे, और उसके पीछे भी कोई पाप नहीं करते थे। क्योंकि वे मालिक को देख रहे थे और उसकी शक्ति को जानते थे, कि हम कहीं भी हों हमारा मालिक हमें देख रहा है और अगर हम कोई गुनाह या पाप करेंगे तो वह हम से नाराज़ हो जाएगा।

अब क्योंकि मालिक को हर एक की प्रवृति (चरित्र) के बारे में मालूम था कि इन में कौन अच्छा है और कौन बुरा। इनमें कुछ ऐसे अच्छे इनसान भी हैं कि वह अपना पूरा जीवन दूसरों की सेवा में बिता सकते हैं और इन में कुछ ऐसे निर्दयी लौग भी हैं जो लाखों मासूम इनसानों की हत्या कर सकते हैं। इस लिए अच्छों और बुरों को एक जगह रखना अन्याय होगा। इसका मतलब तो यह हुआ के अच्छाई और बुराई में कोई अंतर ही नहीं है अच्छा आदमी और बुरा आदमी दोनों बराबर है। इस लिए मालिक ने यह चाहा कि इन मैं से अच्छे लोगों को अलग करूं और उनहें सवर्ग में भेजूं ओर बुरे लोगों को अलग करुं और उनहें नर्क मे भेजूं। लेकिन मालिक यह काम न्याय के साथ करना चाहता था। क्योंकि अगर वह इसी हालत में बुरे लोगों को नर्क में भेज देता तो वह यह सवाल करते कि मालिक ने हमें क्यों नर्क में डाल दिया हम ने कौन सा पाप किया है, क्योंकि अभी तक तो उनहोंने कोई पाप किया नहीं था।

इस लिए मालिक ने वही तरकीब अपनाई जो हम अपने बच्चे य नोकर के साथ अपनाते हैं कि उसको छुप कर देखते हैं कि मेरे सामने तो बहुत भोला बना रहता है लेकिन मेरे पीछे क्या करता है। बिलकुल यही तरकीब मालिक ने अपनाई कि उस ने हमें "आत्माओं की दुनिया" से निकाल कर इस धरती पर भेज दिया और अपने आप को हमारी नज़रों से छुपा लिया। इसी के साथ ही हमें सारी पिछली बातें भी भुला दीं के हम कहां रहते थे और हमारा बनाने वाला कौन है क्योंकि अगर हमें पिछली बातें याद रहतीं तब भी हम भोले बने रहते और कोइ पाप नहीं करते और

इस तरह बुरे लोगों को अलग नहीं किया जा सकता था इस लिए मालिक ने हम से हर वह चीज़ छुपा ली या भुला दी जिस से मालिक या उसकी कुदरत के बारे में हमें ज़रा भी पता चल सके जैसे कि सवर्ग, नर्क, फ़रिशते, जिन्नात वगैरा क्योंकि अगर हमें ज़रा सी भनक भी इन चीजों की लग जाती तो बुरे लोग भी सब नेक बन जाते ओर कोई पाप न करते।

धरती पर आने के बाद क्या हुआ

इस धरती पर आने के बाद अब स्थिति बदल गई क्योंकि हर इनसान को यह दिखने लगा कि हमें कोई नहीं देख रहा अब जो जी चाहे करो बस जीवन का यही सब से बड़ा धोका है और यही सब से बड़ी परीक्षा है।

अब जो लोग बुरे चरित्र के थे वह खुल कर पाप करने लगे क्योंकि उन्हें लगा कि हमें कोई नहीं देख रहा और हम जो काम भी छुप कर करेंगे उसकी किसी को ख़बर नहीं होगी। जब अच्छे लोग उनसे कहते के भाई पाप मत करो तो वह कहते कि हमारा जो जी चाहेगा हम करेंगे तुम कौन होते हो रोकने वाले ज्यादा आदर्शवादी मत बनो, हमें कौन पकड़ेगा। तो अचछे लोग कहते कि भाई ऐसा तो हो नहीं सकता के हमारा बनाने वाला कोई न हो और हमारे किए का फल हमें न मिले तो बुरे लोग कहते दिखाऔ हमारा बनाने वाला कहां है तो अचछे लोग चुप हो जाते क्योंकि बनाने वाले को तो उनहोंने भी नहीं देखा।

अब परिस्थिति यह बन गई के अच्छे लोग कमज़ोर पढ़ गए और बुरे लोग शक्तिशाली हो गए क्योंकि अच्छे लोग हर काम से पहले

यह देखते हैं कि यह काम अच्छा है या बुरा अगर अच्छा होता है तो करते हैं ओर बुरा होता है तो छोढ़ देते हैं कि अगर हम बुरा काम करेंगे तो मालिक नाराज़ हो जाएगा। लेकिन बुरे लोग बस अपना फ़ायदा देखते हैं अगर अच्छे काम में फ़ायदा लगता है तो अच्छा काम करते हैं और अगर बुरे काम मैं फ़ायदा लगता है तो बुरा काम करते हैं इसी कारण उनके लिए सारे विकलप खुले होते हैं। बुरे लोग बे धढ़क झूट बोलते हैं धोका देते हैं पब्लिक को बेवक़ूफ़ बनाते हैं और अच्छे लोगों पर झूटे इलजांम लगाते हैं और अच्छे लोग झूट और धोके में उनका मुक़ाबला नहीं कर पाते।

बुरे लोगों की ज़याादा तर जीत क्यों होती है

अब सवाल यह पैदा होता है कि बुरे लोगों की ज़यादा तर जीत क्यों होती है इसकी मिसाल ऐसी है कि एक कमरे में दो आदमी लड़ रहे हैं और उस कमरे में एक छुपा हुआ कैमरा लगा है और बाहर एक पुलिस अधिकारी उन दोनों को लड़ते हुए स्क्रीन पर देख रहा है। लेकिन उन मैं से एक आदमी को तो पता है कि यहां कैमरा लगा है जबकि दूसरे आदमी को नहीं मालूम कि यहां कैमरा लगा है। तो जिस आदमी को पता है के यहां कैमरा लगा है वह संभल संभल कर चलेगा वह दूसरे आदमी को मारेगा नहीं, गाली नहीं देगा, झूट नहीं बोलेगा बल्कि वह थोड़ा बहुत पिट भी जायगा तो जवाब नहीं देगा क्योंकि उसे मालूम है कि मैं जो कुछ कर रहा हूं उसे पुलिस अधिकारी देख रहा है और बाद में वह हर हर चीज़ का हिसाब लेगा। जबकि जो आदमी यह समझ रहा है के यहां कोई कैमरा नहीं लगा वह बिलकुल नहीं डरेगा वह दूसरे आदमी को मारेगा, गालियां देगा, झूट बोलेगा और हर बुरा काम

निडर हो कर करेगा। अच्छा आदमी यह सोच कर पिट लेगा के कोई बात नहीं यहां पर थोड़ा पिटना बाद में पुलिस की मार खाने और सालों जेल में काटने से अच्छा है। और उसे यह भी यक़ीन होगा के की पुलिस अधिकारी मुझे दगां न करने का इनाम देगा और इस आदमी को दंगा करने कि सज़ा मैं पीटेगा और जेल भेजेगा।

इस तरह दुनया में बुरे लोगों की ज़यादा तर जीत होती है क्योंकि उनके लिए सारे विकलप खुले होते हैं। इस लिए कुछ अच्छे लोग भी बुरे लोगों से जा मिलते हैं क्योंकि वह यह देखते हैं कि बुरे लोगों की ज़्यादा तर जीत होती है इस लिए बुरे लोगों का साथ देने मैं ही फ़ायदा है। इस तरह अच्छे लोग और ज़्यादा कमज़ोर पड़ जाते हैं। लेकिन यह सब मालिक अपने बन्दों की परीक्षा लेने के लिए करता है। इसी तरह से मालिक हर ज़माने में लोगों की परीक्षा लेता है और ज़्यादा तर लोग धोका खा जाते हैं। इसी को मालिक क़ुरान में कहता है “दुनया का जीवन तो धोके का सामान है”। (क़ुरान 3:185)

हमें क्या करना है

मेरे प्यारे भाई जैसा कि ऊपर कहा गया के मालिक हम सब को छुप कर देख रहा है तो यह बात याद रखनी चाहिए के मालिक हर इनसान में दो चीजें देखता है

1. पहली चीज़ तो वह यह देखता है कि इस बन्दे का मेरे बारे में क्या विचार है। आया यह मेरी ही पूजा करता है या किसी मूर्ति की पूजा करता है, मेरे आगे माथा टेकता है या किसी मूर्ति के आगे माथा टेकता है। जब इस पर कोई दुख आता है तो मेरे

आगे गिड़गिड़ाता है यी किसी पीर फ़कीर देवी देवता के आगे गिड़गिड़ाता ओर उस से मदद मांगता है। अगर इसे कोई खुशी पहुंचती है तो मुझे धन्यवाद कहता है या किसी मूर्ति पर माला चढ़ाता है। इस लिए हमें अल्लाह (ईशवर) के अलावा किसी की पूजा नहीं करनी है। ना ही किसी और के आगे माथा टेकना है। मालिक कहता है, और तुमहारा रब एक ही रब है जिस के सिवा कोई पूजा के लायक़ नहीं। वह बहुत महरबान (किर्पावान) और दयालू है। (क़ुरान 02:163)

2. दूसरी चीज़ मालिक हर बन्दे में यह देखता है कि यह बन्दा अपनी मरज़ी से अच्छे कर्म करता है या बुरे। इस लिए हमें अच्छे कर्म करने हैं और बुरे कर्मों से बचना है। मालिक कहता है, उसी (अल्लाह) ने मौत और जीवन को पैदा किया ताके तुमहारी परीक्षा ले कि कौन अच्छे कर्म करता है। (क़ुरान 67:02) लेकिन एसा नहीं है कि अगर हम से कोई पाप हो जाए तो वह मालिक क्षमा नहीं करेगा बलकि वह मालिक कहता है, कह दो ए मेरे बनदों जिनहों ने बहुत पाप किए हैं अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हों। अल्लाह सब पाप क्षमा करदेगा। बे शक वह क्षमा करने वाला और रहम करने वाला है। (क़ुरान 39:53) (लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि हम जान जान कर बार बार पाप करते रहें कि मालिक तो क्षमा करदेगा)।

तो मेरे प्यारे भाई मालिक ने यह छोटी छोटी दो शर्तें लगाई हैं सवर्ग में जाने के लिए कि यह दोनों शर्तें पूरी करके आ जाओ में तुम से खुश हो जाऊंगा और सवर्ग में भेज दूगां। बस यही हमें

हमेशा याद रखना है और इसी हिसाब से पूरा जीवन गुज़ारना है तब हम कभी असफ़ल नहीं हो सकते। इसी बात को समझाने के लिए मालिक ने हर ज़माने में अपने ईशदूतों को भेजा। याद रहे हमारे ज़माने के ईशदूत मौहम्मद साहब हैं इस लिए हमें उनके तरीक़े पर जीवन वयतीत करना है।

हर ईशदूत ने यही बातें बताईं कि **"केवल एक अल्लाह की पूजा करो, अच्छे कर्म करो बुरे कर्मों से बचो ओर अपने ज़माने के ईशदूत के तरीक़े पर जीवन गुज़ारो**"। धरती पर आने वाले पहले इनसान से लेकर आख़री इनसान तक के लिए यही नियम है यह कभी नहीं बदलेगा। हमारे ईशदूत मुहम्मद साहब हैं इसलिए हमें उनके तरीक़े पर जीवन गुज़ारना है।

इस जीवन के बाद

इस जीवन के बाद जब यह दुनया ख़तम हो जाएगी तो अल्लाह सारे इनसानों को एक जगह जमा करेगा और हर इनसान का हिसाब लेगा। हर इनसान के कर्म तोले जाएंगे। तराज़ू के एक पलड़े में अच्छे कर्म रखे जाएंगे और दूसरे पलड़े में बुरे कर्म रखे जाएंगे अगर अच्छे कर्म भारी हो जाएंगे तो सवर्ग में प्रवेश मिल जाएगा और बुरे कर्म भारी हो जाएंगे तो आदमी को नर्क में डाल दिया जाएगा। अब फ़ायदा यह होगा कि बुरे लोग यह शिकायत नहीं कर सकते कि हमें नर्क में क्यों डाला जा रहा है हम ने क्या पाप किया है। उस न्याय के दिन को क़्यामत का दिन कहा जाता है उस दिन अन्याय नहीं होगा क्योंकि मालिक खुद न्याय करेगा, वहां धांधली और रिशवत नहीं चलेगी।

सवर्ग में प्रवेश का श्लोक

अब सवाल यह पैदा होता है कि सवर्ग में जाने के लिए सब से पहले क्या करना है। तो मेरे प्यारे भाई इसके लिए सब से पहले सवर्ग का श्लोक पढ़ना पड़ेगा। हर ईशदूत ने एक श्लोक बताया कि अगर आदमी जीवन में ऐक बार भी इस श्लोक को अपने मालिक के सामने पढ़ ले तो मालिक उसको अपने सच्चे बनदों मे गिन्ने लगता हे क्योंकि यह उस मालिक के सामने इक़रार करना है की ए मालिक में तेरे सच्चे बनदों मे शामिल होना चाहता हूं। यह श्लोक पढ़ने के बाद मालिक उसका नाम नर्क वालों की लिस्ट में से काट कर सवर्ग वालों की लिस्ट में लिख देता है। जैसे किसी स्कूल में एडमिशन लेने के लिए फ़ारम भरना पढ़ता और फ़ीस जमा करना पड़ती है इसी तरह मालिक की सवर्ग में एडमिशन लेने के लिए यह श्लोक पढ़ना पढ़ता है। और मरने के बाद सब से पहला सवाल इसी श्लोक के बारे में होता है। और जब आदमी पहली बार इस श्लोक को पढ़ता है तो मालिक उस बन्दे के सारे पिछले पाप क्षमा कर देता है और वह ऐसा पाक साफ़ हो जाता है जैसे कि वह आज ही मां के पेट से पैदा हुआ हो और अब से ही उसके कर्म लिखने शुरू किए जाते हैं। और जिस दिन आदमी पहली बार यह श्लोक पढ़ता है तो मालिक इतना ख़ुश होता है जैसे किसी मां का बच्चा खो जाए और कई दिन बाद मिले तो वह मां खुश होती है और उस बच्चे को अपने सीने से चिमटा लेती है इसी तरह मालिक खुश होता है कि आज मेरा प्यारा बन्दा नर्क की आग से बच गया। लेकिन मेरे प्यारे भाई अगर यह श्लोक जीवन में एह बार भी नहीं पढ़ा और मालिक के

अलावा किसी और की पूजा की या किसी और के आगे माथा टेका या किसी और से मदद मांगी तो मालिक कभी बी माफ़ नहीं करेगा और हमेशा के लिए नर्क में डाल देगा चाहे किसी ईशदूत का बाप या भाई ही क्यों न हो। तो मेरे प्यारे भाई वह श्लोक यह है पढ़ें **{ला इलाहा इल अल्लाह, मुहम्मदुर रसूल अल्लाह| अर्थः नहीं है कोई पूजा के लायक़ सिवाय आल्लाह के, और मुहम्मद साहब अल्लाह के रसूल (ईशदूत) हैं}**।

मेरे प्यारे भाई अब यह श्लोक पढ़ने के बाद रोज़ाना इसको कम से कम दस बार दोहराना है और मरते सम्य तक दोहराते रहना है और मरते दम तक इसकी रक्षा करनी है। क्योंकि अंत पर ही फ़ैसला किया जाता है जैसे कि कहावत है "अंत भला तो सब भला"। तो मरने से पहले जिसका आखरी शब्द यह श्लोक होगा तो वह ही सवर्ग में जाएगा। अगर यह श्लोक पूरा याद न रहे तो केवल "अल्लाह" भी कह सकते हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि मालिक की पूजा किस तरह करनी है तो मालिक की पूजा ऐसे करनी है जैसे वह हमारे सामने बैठा है और हम उसे देख रहे हैं और मालिक ने अपनी पूजा का तरीक़ा खुद बताया है उसे कहते हैं नमाज़, यानी कभी कभार नमाज़ पढ़नी है वैसे तो पांच वक़्त कि नमाज़ होती है लेकिन अभी शुरुआत में जब मौका मिल जाए पढ़ लें ओर धीरे धीरे बढ़ाते जायें। और थोड़ा क़ुरान पढ़ लिया करें और आज से मुर्ति पूजा बिलकुल छोड़ दें। ओर अगर अभी कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम मालिक का नाम लेना यानी "अल्लाह अल्लाह" कहना तो शुरू कर ही दें कम से कम मालिक की जन्नत में एडमिशन तो मिल जाएगा। मेरे प्यारे भाई

इसका मोक़ा केवल मौत से पहले पहले है ओर मौत कभी भी आ सकती है इसलिए आज से ही उस मालिक का नाम लेना शुरू करदें।

हो सकता है आप इसलाम पर चलना चाह रहे हों लेकिन समाज का डर हो कि अगर किसी को पता चल गया तो कया होगा तो कम से कम उस मालिक का अकेले में नाम तो ले सकते हैं। मालिक हमारे हाल को जानता है कि मेरा बंदा मेरा बनना तो चाहता हे लेकिन समाज के डर से पूरे इसलाम पर नहीं चल पा रहा है लेकीन कम से कम मेरा नाम तो ले रहा है, ‘अल्लाह अल्लाह’ तो कह रहा है तो हो सकता है अल्लाह पूरे इसलाम पर चलने वालों में हमारा शुमार कर ले ओर जन्नत में भेज दे। लेकिन बग़ेर अल्लाह का नाम लिए हम जन्नत में नहीं जा सकते कम से कम ‘अल्लाह अल्लाह’तो कहना ही पड़ेगा। जैसे जैसे हम अल्लाह का नाम लेते जाएंगे अल्लाह की मोहब्बत हमारे दिल में बढ़ती जाएगी ओर हम अल्लाह से क़रीब होते जाएंगे।

अब सवाल यह पैदा होता है कि जन्नत कैसी है, तो मेरे मेरे प्यारे भाई जन्नत में ऐसी-ऐसी नेमतें अल्लाह पाक देंगे जिनको न किसी आँख ने देखा होगा और न किसी कान ने सुना होगा और न किसी आदमी को कभी उनका ख़याल गुज़रा होगा। एक हदीस में है जन्नतियों से कहा जाएगा “हे जन्नत के वासियो, तुम्हारे लिए खुशखबरी है कि तुम हमेशा स्वस्थ रहोगे कभी बीमार न होगे, तुम हमेशा जीवित रहोगे कभी मौत न आएगी, तुम हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे, तुम हमेशा नेमतों में रहोगे कभी वंचित न होगे।”(सही मुस्लिम: 2837)

जब कि जो लोग अल्लाह को भूल कर जीवन गुज़ार रहे हैं अल्लाह के अलावा किसी और की पूजा करते हैं और पाप करते हैं वह दोज़ख़ (नर्क) में डाले जाएंगे जहां वह हमेशा सज़ा पाएंगे। वहां आग होगी, सांप बिच्छू होंगे जो उनको डसेंगे और फ़रिशते उनकी हतौड़ों से पिटाई करेंगे और वहां मौत भी नहीं आएगी। मालिक कहता है, और जो लोग अपने परवरदिगार के मुनकिर (अपने पैदा करने वाले के अलावा किसी और की पूजा करने वाले) हैं उनके लिए जहन्नुम का अज़ाब है और वह (बहुत) बुरा ठिकाना है। जब ये (बुरे) लोग (नर्क में) डाले जाएँगे तो उसकी बड़ी चीख़ सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी। बल्कि गोया जोश के मारे फट पड़ेगी। जब उसमें (उनका) कोई गिरोह डाला जाएगा तो उनसे जहन्नुम का दारोग़ा पूछेगा क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला पैग़म्बर नहीं आया था (कि एक अल्लाह की पूजा करो अच्छे कर्म करो और बुरे कर्मों से बचो)। वह कहेंगे हाँ हमारे पास डराने वाला तो ज़रूर आया था मगर हमने उसको झुठला दिया और कहा कि ख़ुदा ने तो तुम पर कुछ नाज़िल ही नहीं किया, तुम तो बड़ी गुमराही में (पड़े) हो। और (बुरे लोग जब नर्क में डाल दिए जाएंगे तो) कहेंगे कि अगर हम (पैग़म्बर की बात) सुनते और समझते तो (आज) दोज़ख़ियों में न होते। (क़ुरान 67:6-10)

तो मेरे मेरे प्यारे भाई जन्नत में जाने के लिए और दोज़ख़ से बचने के लीए एक बार फिर से श्लोक दोहरा लें,

{ला इलाहा इल अल्लाह, मुहम्मदुर रसूल अल्लाह| अर्थः नहीं है कोई पूजा के लायक़ सिवाय आल्लाह के, और मुहम्मद साहब अल्लाह के रसूल (ईशदूत) हैं}।